मेरे भटकते हुए मन को सही ठिकाना मिल गया
मुरझाया था गुणों का पौधा फिर से खिल गया
प्रभु प्यार की पावन बरसात मुझ पर होने लगी
मेरी मन बुद्धि उसकी मीठी यादों में खोने लगी
आशा का दीप जला निराशा की आंधी मिट गई
सर्व ईश्वरीय शक्तियाँ मुझमें आकर सिमट गई
योग बल से बनने लगा मैं शिव बाबा के समान
भूला मैं अपमान करना देता हूँ सबको सम्मान
जहाँ भी जाऊं पवित्रता की मशाल वहां जलाऊं
काँटों को बदलकर उन्हें खुशबूदार फूल बनाऊँ
काम दिया जो बाबा ने वो मुझको है पूरा करना
विकार मिटाकर सारे गुणों से संसार को भरना
ॐ शांति